VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध
ESSAY

*निर्धारित समय: **तीन घंटे***
*Time Allowed: **Three Hours***

टेस्ट कोड / Test Code : 2488

*अधिकतम अंक: **250***
*Maximum Marks: **250***

सामान्य अनुदेश

इस प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका में 32+2 पृष्ठ हैं। प्रश्न-पत्र, क्यू.सी.ए. पुस्तिका के अंत में संलग्न है, जो अलग (वियोज्य) किया जा सकता है और उम्मीदवार परीक्षा के उपरांत अपने साथ ले जा सकते हैं।

रफ कार्य के लिए तीन खाली पृष्ठ (पृष्ठ संख्या. 30-32) दिए गए हैं।

पुस्तिका प्राप्त होने पर, कृपया यह जांच कर लें कि इस क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कोई कमी न हो, फटा हुआ पृष्ठ न हो अथवा कोई पृष्ठ गायब न हो इत्यादि। यदि ऐसा हो, तो इसके बदले नई क्यू.सी.ए. पुस्तिका प्राप्त कर लें।

General Instructions

This Question-cum-Answer (QCA) Booklet contains 33+2 pages. Question Paper in detachable form is available at the end of the QCA Booklet which can be taken away by the candidate after examination.

Three blank pages (Page Nos. 30–32) have been provided for rough work.

On receipt of the Booklet, please check that this QCA Booklet does not have any shortcomings, torn or missing pages etc. If so, get it replaced with a fresh QCA Booklet.

(उम्मीदवार द्वारा भरा जाएगा/To be filled by the Candidate)

पंजीकरण सं./Registration No. : 1306059

अभ्यर्थी का नाम/Name of Student : MAYANK DUBEY

माध्यम: हिंदी/अंग्रेजी
Medium: Hindi/English
HINDI

निबंध
ESSAY

तारीख
Date
25/08/2023

केंद्र
Centre
Delhi -03

निरीक्षक के हस्ताक्षर
Invigilator's Signature

SE

VISIONIAS

	महत्वपूर्ण अनुदेश **उम्मीदवार को नीचे उल्लिखित निर्देश सावधानी से पढ़ लेने चाहिए। किसी भी निर्देश का उल्लंघन करने पर उम्मीदवार को मिलने वाले अंकों में कटौती, उम्मीदवारी रद्द, आयोग के परवर्ती परीक्षाओं के लिए वर्जित करने इत्यादि के रूप में दण्डित किया जा सकता है।**	**Important Instructions** **Candidate should read the undermentioned instructions carefully. Violation of any of the following instructions may entail penalty in the form of deduction of marks, cancellation of candidature, debarment from further Examination of the Commission etc.**
1	(क) अपना पंजीकरण सं. एवं अन्य विवरण केवल प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) में उम्मीदवार के लिए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। (ख) इस पुस्तिका में अन्यत्र कहीं भी अपना नाम, पंजीकरण सं., मोबाइल नं., पता अथवा प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका (क्यू.सी.ए.) संख्या न लिखें जिससे आपकी पहचान का खुलासा हो।	(a) Write your Registration Number and other details only in the space provided in the Question-Cum-Answer (QCA) Booklet for candidates. (b) Do not disclose your identity in any manner such as, by writing your Name, Registration number, Mobile number, Address, Question-Cum-Answer (QCA) Booklet No. etc. elsewhere in the Booklet
2	अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में कहीं भी प्रश्नों के वास्तविक उत्तर के अतिरिक्त कुछ न लिखें जैसे कि कोई कविता/दोहा, अभद्र या अपमानजनक अभिव्यक्ति इत्यादि और न ही कोई ऐसा चिन्ह/निशान बनाएं जिसका उत्तर से सम्बन्ध न हो।	Do not write in the QCA Booklet anything other than the actual answer such as couplet, obscene, abusive expression etc., nor put any sign/mark having no relevance to the answer.
3	परीक्षक को प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी प्रार्थना/धमकी भरी बातें न लिखें।	Do not make any direct/indirect appeal/threat to the examiner.
4	उत्तर अस्पष्ट अथवा गंदी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तर का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।	Do not write answers in bad/illegible handwriting. Such answers may not be evaluated.
5	उत्तर स्याही में ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें, हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।	Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answers. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.
6	प्रवेश पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली जुली भाषा का भी उपयोग न करें।	Do not write answers in medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language either i.e. authorize and unauthorized media together for writing answers.
7	प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें। निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।	Write answer at the specific space (right below the question) only. Answers written elsewhere at unspecified places in the booklet shall not be evaluated.
8	यदि आप अपने किसी उत्तर को रद्द करना चाहते हैं तो उसे पेन से काट दें तथा उस पर "रद्द" लिख दें, अन्यथा उसका मूल्यांकन किया जा सकता है।	If you wish to cancel any work, draw your pen through it and write "Cancelled" across it, otherwise it may be valued.

VISIONIAS

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

ABHYAAS MAINS

निबंध

निर्धारित समय: तीन घंटे

टेस्ट कोड : 2488

अधिकतम अंक: 250

प्रश्न-पत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबंध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिए।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ व पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

ESSAY

Time Allowed : Three Hours

Test Code : 2488

Maximum Marks : 250

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

World limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

VISION IAS

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

VISION IAS

खंड A और B प्रत्येक से **एक-एक** विषय चुनकर **दो** निबंध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000-1200 शब्दों में हो :

Write **two** essays, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each : 125 x 2 = 250

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

खण्ड – A / SECTION – A

टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।

It is easier to build strong children than to repair broken men.

कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।

A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।

Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।

History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।

The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।

The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।

Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।

Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

खण्ड – A / SECTION – A

उम्मीदवारों इस हाशिए नहीं लिखन चाहिए
Candid must no write on this mar

1. टूटे हुए वयस्क की मरम्मत करने की तुलना में मजबूत बच्चों का निर्माण करना आसान है।
It is easier to build strong children than to repair broken men.

2. कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।
A mind all logic is like a knife all blade, it makes the hand bleed that uses it.

3. जब कैटरपिलर को लगता है कि दुनिया खत्म हो गई, वह तितली बन जाता है।
Just when the caterpillar thought the world was over, it became a butterfly.

4. इतिहास, मनुष्य की स्मृतियों पर समय द्वारा लिखी गई एक चक्रीय कविता है।
History is a cyclic poem written by time upon the memories of man.

"कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू के समान है जिसमें केवल फलक ही फलक है, वह प्रयोग करने वाले हाथों को ही लहूलुहान कर देता है।"

भारतीय तर्कशास्त्र में एक बेहद प्रासंगिक उदाहरण दिया जाता है - "सभी गायों की पूँछ होती है, बन्दर की भी पूँछ होती है अतः सभी बन्दर गाय हैं।" भले ही उपर्युक्त कथन हास्यास्पद लगे किन्तु तार्किक दृष्टि से अकाट्य सत्य है। यहाँ मूल समस्या यह है कि पूँछ होने को गाय की एकमात्र विशेषता मान लिया गया है, और उपलब्ध

तथ्य के आधार पर ही बन्दर को गाय घोषित कर दिया गया है। यह वही जैन दर्शन के 'स्यादवाद' की भाँति है, जहाँ एक हाथी का निरूपण अलग-अलग व्यक्ति न देख पाने और केवल छू कर निष्कर्ष निकालने के क्रम में अपनी चेतना के अनुसार भिन्न-भिन्न रूप में करते हैं।

तर्क किसी निष्कर्ष अथवा परिणाम को साबित करने या खारिज करने हेतु प्रयोग में लाया जाता है, इसका मूल चरित्र ही काटने का है प्रत्येक शब्द को प्रतिशब्द से, तथ्य को प्रति-तथ्य से। लेकिन तर्क भी पूर्वाग्रह से युक्त होता है, कई बार व्यक्ति तर्क जीवन को समझने हेतु नहीं करता, अपितु तर्क अपने निष्कर्षों की पुष्टि के लिए करता है। उदाहरण के तौर पर कोई व्यक्ति यदि चेतना से पितृसत्तावादी

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

है, तो वह महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह रखेगा एवं प्रत्येक कार्यक्षेत्र में महिलाओं की कम भागीदारी को उनकी अक्षमता के कुतर्क के आधार पर तार्किक रूप से सही भी मानेगा। उसके मन-मस्तिष्क से हो सकता है सामाजिक विभेद, अवसरों की असमानता, कार्यस्थलों पर उत्पीड़न जैसे तथ्य पूर्णतया विलोपित हो जाएँ एवं वह अपने पूर्व-मान्य निष्कर्ष की प्रतिपुष्टि सीमित तथ्यों से करता रहे। अंततः इसका परिणाम यह होगा कि वह अपने पूर्वाग्रह को प्रसारित करेगा और सामाजिक सद्भाव व समरसता को क्षति भी पहुँचाएगा। यह वह तर्कपूर्ण चाकू का प्रयोग कर स्वयं भी आहत होगा और पूरे समाज को लहूलुहान करेगा।

भारतीय दर्शन में मस्तिष्क को चार भागों में विभक्त किया गया है—

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। यहाँ बुद्धि का तात्पर्य तर्कभेद एवं तार्किकता से है, इसे कृपाण (तलवार) की संज्ञा दी गई है, इसका मूल गुण है 'काटना' और यहाँ कहा गया है कि यह पूरे विश्व के सभी मान्यताओं का खण्डन करने की शक्ति रखती है। किन्तु भारतीय मनीषियों ने इस तर्कबुद्धि को ही इत्यलम् नहीं माना, बल्कि उन्होंने इसका विस्तार 'चित्त' तक किया जहाँ जीवन के सभी तत्व समरस हो जाते हैं, ज्ञाता एवं ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाता है। जैन दर्शन में इसे ही 'कैवल्य' की प्राप्ति कहा गया है। यही जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है।

तर्क तथ्यों पर आधारित होते हैं और तथ्यों की अपूर्णता तर्क को कुतर्क में परिवर्तित कर देती है। भारतीय न्यायशास्त्र में एक शब्द है 'काक कुतर्क'।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

'कोकुतर्क' ऐसी स्थिति है, जहाँ तर्क करने वाला स्वयं में अभिभूत होकर किसी अन्य के पक्ष को सुनना ही नहीं चाहता वह अपने ही निष्कर्षों की नित निरंतर पुष्टि करता रहता है, चाहे वे स्वयं ही अतार्किक एवं अप्रासंगिक ही क्यों न हो। कुतर्क में भावों का समावेशन नहीं होता, वह कोरी मान्यताओं पर आश्रित होता है।
रहीम ने ईश्वर के होने अथवा न होने के वितण्डावाद पर बड़ी ही मार्मिक बात कही है - "जानत हैं सो कहत नहीं, कहत सो जानत नाहीं।" जो ईश्वर को जानते हैं, वे कहते नहीं क्योंकि वह भाव का विषय है वह कबीर के यहाँ गूंगे की गुड़ है, वह उसका रस, उसका स्वाद बताना भी चाहे तो कैसे बताए उस अनिर्वचनीय तथ्य को। किन्तु जो नहीं जानता वह तर्कों के माध्यम

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

से या तो ईश्वर के होने का अथवा न होने का दावा करता रहता है।

इसीप्रकार तर्कशास्त्र से गणितीय प्रश्न तो हल किए जा सकते हैं किन्तु जीवन के प्रश्न नहीं। क्योंकि जीवन जटिल है, गतिशील है। जीवन के सत्य का आधार स्थिर नहीं है, वह बदलता रहता है। जीवन में तथ्यों की नहीं भावों की प्रधानता है। एक बच्चे की किलकारी से प्रसन्न होने में जो भावुकता है, जो आनंद है, उसे कोरे तर्क से नहीं समझा जा सकता, वह तो उसे ही समझ आ सकता है, जो सहृदयी है, जिसमें वात्सल्य का भाव है, जो जीवन को अलग-अलग खांचों स्वरूप नहीं देखता बल्कि जीवन के विराट स्वरूप को एकाकार करके देखना चाहता है।

जीवन भावों से संयुत होते हुए भी कई स्थानों पर अतार्किक भी है,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

जीवन की पूरी संरचनाएँ परस्पर गुम्फित हैं, यहाँ घटनाएँ तार्किकता के स्थान पर आकस्मिकता से संचालित हैं। किसी के पास इतना धन है कि सात पुश्तें उसे समाप्त न कर पाएँ और किसी के पास रोते-बिलखते बच्चों का पेट भरने बराबर भी अनाज नहीं। कोई जन्म से विलक्षण प्रतिभा से युक्त है, तो कोई जन्म से ही अंगों से रहित (दिव्यांग)। यहाँ कोई तार्किक दृष्टि इनकी व्याख्या नहीं कर सकती और इसी प्रकार तर्क से संचालित व्यक्ति के साथ ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनकी व्याख्या संभव नहीं, तो वहाँ उत्पन्न होता है आत्मनिर्वासन, टूटन, पलायन, संत्रास जैसी स्थितियाँ, जो व्यक्ति को पूर्णतया अमानवीय बनाने की भी क्षमता रखती हैं।

विद्वानों के लिए हमेशा यह जटिल प्रश्न अनुत्तरित रहा है कि जीवन का

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए Candidate must not write on this margin

लक्ष्य क्या है? और उस लक्ष्य को प्राप्त करने का माध्यम क्या है? भिन्न भिन्न मनीषी इस पर भिन्न भिन्न राय देते हैं. कुछ सुख को महत्व देते हैं, कुछ मुक्ति को, कुछ सेवा तथा करुणा को तो कुछ संतोष व आनंद को। लेकिन मार्ग के रूप में कोई भी कोरे तर्क का आश्रय नहीं देता, इसमें भावों और मूल्यों का सुयोग अवश्य रहता है।

आर्थिक प्रतिमानों की दृष्टि से देखें तो सर्वप्रथम स्मिथ ने एक आर्थिक प्रतिमान दिया - "मांग-आपूर्ति संबंधों का अदृश्य हाथ"। जहाँ व्यक्ति को पूर्णतया तार्किक उपभोक्ता माना गया किन्तु जब यह मॉडल असफल रहा तो कीन्स ने अपने मॉडल में तार्किकता के स्थान पर इच्छा को महत्व दिया, किन्तु आज वह भी प्रतिमान अप्रासंगिक हो चुका है,

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

आज के अर्थशास्त्री मनोविज्ञान को अर्थशास्त्र से जोड़कर देखते हैं और चयन प्रक्रिया में भावों से संचालित दृष्टि को प्रस्तावित कर रहे हैं। यहाँ अब मिथ के तर्कपूर्ण चयन का स्थान आधुनिक भावपूर्ण चयन ने ले लिया है।

इसी प्रकार राजनीतिक दृष्टि से देखें तो पूरी तार्किकता से जनता के भावों को समझने की चेष्टा करना अप्रासंगिक ही प्रतीत होता है। क्योंकि समाज में तथ्य मात्र नहीं हैं, यहाँ सांस्कृतिक चेतना है, जीवन उल्लास का रस प्रवाहित है, यहाँ आत्मीयता एवं सामाजिक बन्धन का भाव भी है, कोरे तर्क से इस सब की व्याख्या करना न तो वांछनीय है और न ही संभव। आज हम अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व किसी तर्क से संचालित होकर नहीं करते, आसमान में लहराते

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

तिरंगे को देखकर हमारे अंदर अवचेतन में बैठी पूरे स्वतंत्रता संघर्ष की स्मृतियाँ एक साथ आन्दोलित हो उठती हैं और विचार आता है कि इसकी रक्षा हेतु जीवन भी चला जाए, तो वह भी समर्पित है। यह देशप्रेम का भाव जीवन को एक दिशा देता है यह तर्क से संभव नहीं। तर्कशास्त्र के आधार पर राष्ट्रध्वज एक प्रतीक का विषय मात्र है, जबकि एक भारतीय नागरिक की भावभूमि पर वह राष्ट्रीय गौरव का विषय बन जाती है।

किन्तु यह भी ध्यान रखने की आवश्यकता है कि कोरी तार्किकता अवांछनीय होते हुए भी तार्किकता के अनुप्रयोग को हम नकार नहीं सकते। यह जिज्ञासु मानव के जीवन को संचालित करने का एक माध्यम है, वह निर्णय लेने का एक ठोस प्रभावी उपकरण भी है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

बिना तर्क के हम न्याय शास्त्र की कल्पना भी नहीं कर सकते। बिना तर्क के कोई वैज्ञानिक प्रगति भी संभव नहीं। बिना तर्क के हम सामाजिक सद्भाव की भी कामना नहीं कर सकते क्योंकि तर्क ही लाभ - हानि के संबंधों का संचालक है। आज पूरा प्रौद्योगिकी जगत तर्कों का ही उपयोग कर आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस व मशीन लर्निंग जैसे अभिनव उपकरण का प्रयोग करने में सक्षम हुआ है। समुचित निर्णय लेने हेतु आज भी तर्क एक अकाट्य, प्रभावी उपकरण है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तर्क एक चाकू है, जिसमें केवल धार है, तो आवश्यकता यह है कि इसकी एक धार पर भावों का हत्था चढ़ाएँ और इसके ~~कि~~ उपयोग में विवेक के पक्ष को न भूलें। 'अति सर्वत्र वर्जयेत्"

अतः बुद्ध द्वारा प्रस्तावित मध्यम मार्ग को अपनाते हुए जीवन को करुणायुक्त, और दोषों से मुक्त करने में ही मानव कल्याण निहित है। आदिशंकराचार्य ने मुक्ति के क्षण को 'सोऽहं' कहा था (मैं वही हूँ) और वहाँ वे उस भावभूमि पर कहते हैं- "मनो बुद्धि अहंकार चित्तानि नाहं" अर्थात् न तो मैं मन हूँ, न बुद्धि, न अहंकार और न ही चित्त।" अर्थात् पूर्ण मुक्ति की दशा आनंद की दशा में सभी प्रकार के तर्कों-कुतर्कों, विचारों तथ्यों से मुक्त ब्रह्मलीन व्यक्ति। शायद यह स्थिति सभी के लिए सुलभ न हो किन्तु तर्क एवं भाव में सामंजस्य का मार्ग तो सर्वसुलभ है, यह न तो किसी को बहुभुलान करेगी और न ही स्वयं को क्षति पहुँचाएगी।

खण्ड – B / SECTION – B

5. बुद्धिमान व्यक्ति तुरंत वही करता है जो मूर्ख अंततः करता है।
The wise man does at once what the fool does finally.

6. दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है जो विचार करते हैं।
The world is a tragedy to those who feel, but a comedy to those who think.

7. पूर्ण स्पष्टता से बुद्धि को तो लाभ होगा लेकिन इच्छाशक्ति को क्षति पहुंचेगी।
Perfect clarity would profit the intellect but damage the will.

8. अपना चेहरा रोशनी की ओर रखिए और आपको कोई छाया दिखाई नहीं देगी।
Keep your face to the sunshine and you cannot see a shadow.

"दुनिया उन लोगों के लिए एक त्रासदी है जो महसूस करते हैं, लेकिन उन लोगों के लिए एक कॉमेडी है, जो विचार करते हैं।"

बुद्ध, जब राजकुमार सिद्धार्थ थे, तब उन्होंने दुःख के चार दृश्य देखे थे – रोगी, वृद्ध, मृत्यु और सन्यासी और इसी से व्यथित होकर उन्होंने महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) का निर्णय लिया, उन्होंने मानव जीवन के दुःखों को महसूस कर प्रस्तावित किया "सर्वं दुःखम् दुःखम्" (सभी जगह दुःख ही दुःख है)

किन्तु वही बुद्ध जब श्रावस्ती में अंगुलीमाल जैसे कुख्यात डाकू के सामने आए, तो जीवन की निस्सारता व निरर्थकता का बोध बुद्ध के एक ही कथन "क्या तुम पेड़ से तोड़ी गई टहनी को पुनः जोड़ सकते हो?" से अंगुलीमाल को और पूरे जगत को करा दिया। यह दृष्टांत भावुक सिद्धार्थ के विचारशील बुद्ध में रूपांतरण को पूरी मार्मिकता के साथ व्याख्यायित करता है।

जीवन विसंगत है और यही विसंगति ही इसे त्रासद और हास्यास्पद दोनों एकसाथ बनाती है। जो भावों से संचालित हैं उनके लिए 'त्रासदी' और जो विचारों से संचालित है उनके लिए 'कॉमेडी'। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री जेन मेनार्ड कीन्स ने कहा है "At the end we all are dead." यह सभी को मालूम है कि मृत्यु अटल सत्य है किन्तु इसकी व्याख्याएँ लोगों के लिए भिन्न-भिन्न

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

है। बुद्ध के लिए मृत्यु भय उत्पन्न करने वाली हो सकती है, तो बुद्ध के लिए जीवन की पूर्णता। उदाहरण के लिए पृथ्वीराज चौहान द्वारा गौरी को जीवनदान देना अंततः ~~पराजय~~ पराजय का कारण भी बनी किन्तु यह क्षात्र धर्म के अनुसार उनके जीवन को सार्थक भी बनाती है।

जीवन में सभी निर्णय अधूरे हैं, हर निर्णय में कुछ प्राप्त होता है तो कुछ छूट जाना आवश्यक है और यही निर्णय की विसंगति जीवन को अतार्किक बनाती है। कुछ के लिए छूट जाने का दुःख ज्यादा महत्वपूर्ण है, तो जीवन त्रासद नजर आता है, कुछ के लिए सभी निर्णय गलत होने का भाव निर्णयों को ही हास्यास्पद बना देता है - आखिर किसके लिए और क्या प्राप्त करने के लिए प्रयत्न किए जाएँ यह प्रश्न हमेशा बना रहता है।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

इस परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक उपयुक्त दृष्टांत साहित्य क्षेत्र में उपलब्ध है। भाववादी कवि जैसे सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा एवं जयशंकर प्रसाद जीवन को दुःख के कोण से अधिक देखते हैं -

" स्नेह निर्झर बह गया है,
रेत ज्यों तन रह गया है,
मैं अलक्षित हूँ,
कवि कह गया है..."
(निराला)

किन्तु आधुनिक नवलेखन के रचनाकार जैसे सर्वेश्वर की कविताओं में दुःख और विसंगति व्यंग्य की सृष्टि करता है.

"एक ऐसी जिंदगी...
जिसे हर रोज जीता हूं.
फटे जूते के घिसे सोल का
टूटा हुआ फीता हूं.
मन को समझाता हूं.
क्रांति का पलीता हूं...."

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उपर्युक्त कविता को देखकर सभी विश्वास, विचारधारा, आश्वासन, मूल्य आदि झूठे दिलासे की तरह लगते है. जीवन स्वयं में एक व्यंग्य की भाँति लगता है। यह आवश्यक नहीं कि अच्छे के साथ अच्छा ही हो और बुरे के साथ बुरा। हो सकता है अच्छे के साथ भी बहुत बुरा हो जाए और बुरे के साथ भी बहुत अच्छा। यही अतार्किक परिणाम या तो जीवन को संत्रास से भरकर त्रासद करते हैं, या निरर्थकता बोध से अनास्था की ओर अग्रसर करते हैं। उदाहरण के लिए सत्येन्द्र दुबे जैसे ईमानदार अधिकारी की हत्या होना, जबकि भ्रष्टाचार में लिप्त महानुभावों का जन-जीवन में पूजा जाना अपने आप में जितना त्रासद है, उससे भी कहीं ज्यादा हास्यास्पद !!

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

विसंगतियाँ परिस्थिति संचालित ही न होकर समाज संचालित भी होती हैं। समाज हमसे एक स्थापित व्यवहार की अपेक्षा करता है, किन्तु उस व्यवहार के अनुरूप कार्य करने पर मिलता क्या है एक संत्रास युक्त जीवन। महिलाओं की स्थिति पर रघुवीर सहाय ने लिखा है-

"पढ़िए गीता, बनिए सीता
निज घर बार बसाइए,
होय कँटीली आँखें गीली,
तबीयत ढीली लकड़ी सीली
घर की सबसे बड़ी पतीली,
भरकर भात पसाइए।"

सबकुछ सामाजिक मानदण्डों एवं आकांक्षाओं के अनुरूप करने पर भी मिला क्या पूरी महिला जाति को घरेलू कार्यों में संलग्न एक विस्मृत जीवन। अब यह सोचने वाले के भाव पर निर्भर करता है कि वह अपने जीवन पर दुःखी हो अथवा स्वयं पर हँसे कि यह जीवन का कैसा मजाक था?

इस स्थिति को अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में भी देख सकते हैं। जमीन में सीमाएँ खींच दी गईं, बाड़ लगा दी गईं कुछ कृत्रिम आधारों पर जैसे - भाषा, धर्म, संस्कृति, बल, शक्ति आदि। युद्ध होने लगे किस लिए? झूठी अस्मिता की रक्षा के लिए!! विश्वयुद्ध हुआ, लाखों लोग मारे गए, किसके कारण? राष्ट्रीय गौरव के नाम पर!! एक मानवजनित आपदा, जिससे पूरा विश्व क्षत विक्षत हो गया। आज भी विश्व युद्ध में बिछाए गए भूमिगत सुरंगों (लैण्ड माईन) से हजारों लोगों की मृत्यु होती है, जिसकी पीड़ा से आज भी धरती लहूलुहान हो रही है। इस पूरी स्थिति पर कोई व्यक्ति दुःखी तो होगा ही पर आज उन राष्ट्राध्यक्षों की मूर्खता पर हँसता भी है, जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए लाखों लोगों के प्राणों की आहुति दे दी।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

महाभारत में दुर्योधन ने श्रीकृष्ण के शांति प्रस्ताव को ठुकराकर मूर्खतापूर्ण कहा था - "सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव" (बिना युद्ध के सुई के नोंक के बराबर भी भूमि नहीं दूंगा)। परिणाम क्या हुआ? महाभारत का युद्ध!! अंत में महाभारत शांतिपर्व में युद्ध के परिणाम से आहत युधिष्ठिर युद्ध की विभीषिका को देखकर दुःखित होते हैं, एक भाव युक्त मनुष्य के लिए यही नियति है।

किन्तु उसी शांति पर्व में भीष्म जैसे विचारशील व्यक्ति जिन्होंने राजसभा में अन्याय को देखा किन्तु प्रतिकार करने में असफल रहे, युधिष्ठिर को सांत्वना देते हैं, दिनकर ने भीष्म के शब्दों को कविता में बाँधकर लिखा है -

"रुग्ण होना चाहता कोई नहीं,
रोग लेकिन आ गया जब पास हो,
तिक्त औषधि के सिवा उपचार क्या
शमित होगा वह नहीं मिष्ठान्न से।"

विचारशीलता की अपनी सीमा भी है, विचार से बुद्धि प्रखर होती है, परिणामों के संत्रास से व्यक्ति की रक्षा भी होती है, किन्तु अंतिम सत्य को जानना मनुष्य को अकर्मण्य भी बनाता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इसी पर व्यंग्य करते हुए लिखा है -

"जो पठितव्यं सो मर्तव्यं,
जो न पठितव्यं सो भी मर्तव्यं
फिर दन्त कटाकट किं कर्तव्यं।"

जब अंततः सब कुछ नष्ट ही होना है, तो फिर परिश्रम ही क्यों? और इसी अकर्मण्यता ने आजतक विचारशील मनुष्यों को सक्रिय जीवन से जुड़ने से रोके रखा है। भारत में पढ़े-लिखे लोगों का मतदान में भाग न लेना इसका जीवंत उदाहरण है, यह विचार कि एक वोट से क्या होगा? यहाँ वे इस बात को भूल जाते है कि -

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

"जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।"

कुछ न करने से कुछ करना ही ठीक है
बूंद बूंद ही सही, घड़ा उसी से भर जाएगा।

विचारशील मनुष्य के लिए

दुनिया इसलिए भी कॉमेडी लगती है क्योंकि वह दुनिया को इस क्षण में न देखकर पूरी परंपरा में देखता है। जो कल पुण्य था आज पाप है, जो कल अपराध था आज नैतिक। उदाहरण के लिए जातिव्यवस्था अथवा बलिप्रथा आज स्वीकृत नहीं की जाती किन्तु समलैंगिक संबंध आज पूरे समाज में स्वीकृत होने लगे हैं और विधिक रूप से नैतिक भी माने गए हैं। जो प्रतिमान आज हैं, उनका आधार निश्चित नहीं रहेगा वे भी समय के साथ बदलेंगे, तो फिर जीवन में तार्किकता कहाँ है?

किन्तु भावशील व्यक्ति इसी अतार्किकता से दुःखी भी होगा कि ऐसा क्यों है?

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

आज की आवश्यकता भावों एवं विचारों के सामंजस्य की है। विचार यथार्थ को समझने की दृष्टि देते हैं, तो भाव मनुष्य को गतिशील करते हैं। कोरी विचारशीलता व्यक्ति को अकर्मण्य बना सकती है लेकिन भावों का समावेश जीवन को सार्थक बनाता है। हम मनुष्य हैं क्योंकि हम महसूस कर सकते हैं आज भी विभाजन की त्रासदी हमारे चित्त में अंकित है, ~~स~~ स्मृति में संचित है और इसलिए हम उन गलतियों को दोहराना नहीं चाहते। एक मूल्य आधारित लक्ष्य संचालित, सहयोगी, समावेशी, स्वतन्त्र विश्व का निर्माण करने के लिए विचारों से परिष्कृत और भावों से संचालित नीतियों का अनुसरण कर हम अपने वसुधैव कुटुम्बकम् के ~~आदर्शों~~ आदर्श को प्राप्त कर सकेंगे।

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

उम्मीदवारों को इस हाशिए में नहीं लिखना चाहिए
Candidates must not write on this margin

SPACE FOR ROUGH WORK

महावीर बुद्ध — सर्वं दुःखम् दुःखम्
— अंगुलीमाल के समर्थ.
4 दृश्य — रोगी, वृद्ध, मृत, सन्यासी

बालक सिद्धार्थ का विचारशील बुद्ध में conversion

ऐतिहासिक ? सुत्तपिटक — नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव

शांति पर्व — सभी सुखी हैं
— महसूस करने वाले मन
— विचारशील जीवन.

"At the end we all are dead."

मार्ग करने का → शब्दों प्रतिशब्द से.

SPACE FOR ROUGH WORK

कोरा तर्कपूर्ण मन उस चाकू ...

तर्क < सुतर्क / कुतर्क में बदल जाता है?

"तर्क भी पूर्वाग्रह से ग्रसित होता है" — तर्कभेद

बुद्ध → मध्यम मार्ग.
(भाव की प्रतिष्ठा – करुणा, क्षमा,

मनोबुद्धिअहंकार चित्त निनाद → मुक्त होना (शंकराचार्य)
सोऽहं "सोऽहं"

"तर्क दोषमुक्त तो नहीं किन्तु आवश्यक अवश्य है"
↓
विचार का एक पक्ष अवश्य है।
↓
कंप्यूटर

क्रम तथ्यों से यह मान ले कि तथ्य पूर्ण हैं और उन्हीं के आधार पर निर्णय

गाय और बंदर

मानवीय प्रश्न हल कर सकते हैं
↓
सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक
↓
सामाजिक मनोविज्ञान और भावों का समन्वय हो.

लेखक → अतार्किक जीवन को तार्किकता से समझने की चेष्टा वेदना का सृजन करती है

→ अनास्था, आत्मविश्वास, किन्तु और परन्तु जैसे शब्दों में उलझा

आर्थिक → [illegible] स्मिथ, कीन्स, नव विचार → विकास किसने सोचा था

सामाजिक → विश्वास, परिवार का अस्तित्व, समाज धार्मिक संबंध

राजनीतिक → भाव भूमि पर नहीं भावों से अलग → व्यक्ति को उपकरण

ऐतिहासिक / पौराणिक → [illegible] कालक्रम →

SPACE FOR ROUGH WORK

(logic) गाय और बन्दर

→ स्कूलों में तर्कशास्त्र

तर्कपूर्ण मन

→ जटिल व गतिशील जीवन — युद्ध की विभीषिका

पूर्ण स्पष्टता — जो परिवर्तन

अंजाम मैं न चाहूँ

विवेक का नाश

इच्छाशक्ति की शक्ति

त्रासदी है — फील महसूस करते हैं।

सर्वदुःखम् दुःखम्

त्रासदी — दुनिया / स्पर्श / अच्छे के साथ अच्छा हो आवश्यक नहीं।

नियति दुःख में भी।

वे चल दुःखे भुलवा देना

Comedy है जो विचार करते हैं

व्यंग्य भी — मजाक क्या है — किसके लिए — युद्ध क्यों?

दुनिया का इतिहास पूछता रोज नया वह इन्सान ईमान कहाँ

फर्क नहीं पड़ता है — हास्य व्यंग्य भी है — खुशी

ऐसी जिन्दगी जिसे पल-पल जीता है मर-मर कर किसे सोच का दूसरा लीला

मन के जुनून में है क्रांति का पलीता है

जिंदगी → परिभाषा

रघुवीर सहाय.